# बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
## बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

## मौसम आधारित कृषि सलाह

**(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 102/2024) Year: 6th**

| जिला: बाँदा | जारी करने की तिथि: 20/03/2024 |
|---|---|

| क्रम सं | विभाग | सलाह |
|---|---|---|
| 1- | **शाक-भाजी** | ➢ ग्रीष्म कालीन कुल्फा, चौलाई, लोबिया, भिंडी, लौकी, करेला, कद्दू, तरोई, खीरा, ककड़ी, की बुआई करें।<br>➢ ग्रीष्म कालीन टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च, भिंडी व कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई के उपरांत पलवार प्रयोग करें।<br>➢ फसलों में माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंसा अनुसार प्रबंधन करें। |
| | | |
| 2- | **शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन** | ➢ परिपक्व सरसों, मसूर, मटर, चना आदि की फसल को काटकर सुरक्षित स्थान पर रखें ताकि ख़राब मौसम में नुक्सान से बचाया जा सके. काटे गए फसलों की ससमय थ्रेशिंग कर सुरक्षित भण्डारण कर लें.<br>➢ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू करदें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी० ए० पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए!<br>बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है ! १ किग्रा बीज के लिए ४-६ मिली तरल राईजोबियम के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें! उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें ! |
| | | |
| 3- | **पशुपालन प्रबंधन** | ➢ इस माह में मौसम में बदलाव की वजह से होने वाले रोगों इत्यादि का बचाव करने के साथ ही साबधानियाँ भी बरतेंगे।<br>➢ मच्छर व बाह्य परजीवी कीटों का प्रकोप इस मौसम में अधिक होता हे जिस कारण कारण परजीवियों द्वारा फैलने वाली कई बीमारियां व रोग पशुओं को घेर सकते हैं इस मौसम में इनका बचाव अति आवश्यक हे। पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार उपयुक्त दवाई का छिड़काव नियमित रूप से करें।<br>➢ पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीके समय समय पर अवश्य लगवाएं।<br>➢ रबी का मौसम में बोई गयी बरसीम, जाई, अल्फा अल्फा इत्यादि चारे की फसलों में 10–12 दिन के अंतर पर नियमित सिचोयी करें ।<br>➢ ग्रीष्म ऋतू में हरा चारा लेने के लिए ज्वार, मक्का व बाजरा की बुआई भी करें। हरे चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीज का प्रयोग करें। |

| | | |
|---|---|---|
| | | ➢ ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाव हेतु व उनमे रोग प्रतिरोधक छमता बढ़ाने के लिए 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन दें। |
| 4– | **कीट–प्रबंधन** | ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2. 5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।<br>➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तरालपर 2–3 छिड़काव करें। |
| 5– | **पादप रोग प्रबंधन** | ➢इस मौसम में प्याज की फसल में परपल ब्लोस रोग की निगरानी करते रहें। रोग के लक्षण पाये जाने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्रा./ली. पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि (1 ग्रा. प्रति एक ली. घोल) में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।<br>➢इस मौसम में बेलवाली सब्जियों और पछेती मटर में चूर्णिल आसिता रोग के प्रकोप की संभावना रहती है। यदि रोग के लक्षण दिखाई दे तो हेक्साकोनाजोल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। |
| | | |
| 6. | **बागवानी. प्रबंधन** | ➢ इस माह किसान भाइयों को गर्मी से पौधों की सुरक्षा तथा सिंचाई नालियों की मरम्मत कर लेना चाहिए।<br>➢ इस महीने में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से 7 से 10 दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें।<br>➢ फलदार पौधों के थालों में घास फूस या भूसे का पलवार के रूप में प्रयोग करें जिससे कि वाष्पोत्सर्जन के द्वारा होने वाले पानी के झरण को रोका जा सके।<br>➢ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु प्रोफेनोफॉस 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम अथवा डाइनोकैप 1.0 मि.ली. की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। |

<table>
<tr><td></td><td></td><td>➢ काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरैक्स 10 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.।</td></tr>
<tr><td>7.</td><td>वानिकी प्रबंधन</td><td>गर्म हवा के दुष्प्रभाव से पौध को बचाने के लिए शाम के समय पौधशाला में नियमित सिंचाई करें। आगामी मानसून को ध्यान में रखते हुए किसान भाइयो को सुझाव दिया जाता है कि नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें। इसके अलावा बारिश के मौसम में वृक्षारोपण कार्यक्रम की योजना बनायें जैसे वृक्ष की प्रजातियों का चयन, गड्ढे तैयार करना इत्यादि।<br><br>
<table>
<tr><td>इमारती लकड़ी</td><td>सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, नीम, मालाबार नीम, महानिंब, कैजुआराइना</td></tr>
<tr><td>चारा</td><td>शहतूत, खेजड़ी, अंजन, महानिंब, कचनार, सुबबूल</td></tr>
<tr><td>फल वृक्ष</td><td>महुआ, जामुन, आँवला, कटहल, शहतूत, बेल, चिरौंजी</td></tr>
</table>
</td></tr>
</table>

## वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

| | |
|---|---|
| 1. डॉ जी. एस. पंवार | 7. डॉ मयंक दुबे |
| 2. डॉ दिनेश साह | 8. डॉ अमित मिश्रा |
| 3. डॉ ए.सी. मिश्रा | 9. डॉ दिनेश गुप्ता |
| 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव | 10. डॉ पंकज कुमार ओझा |
| 5. डॉ राकेश पाण्डेय | 11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह |
| 6. डॉ विवेक सिंह | |